संघर्षशील आदिवासी समाज

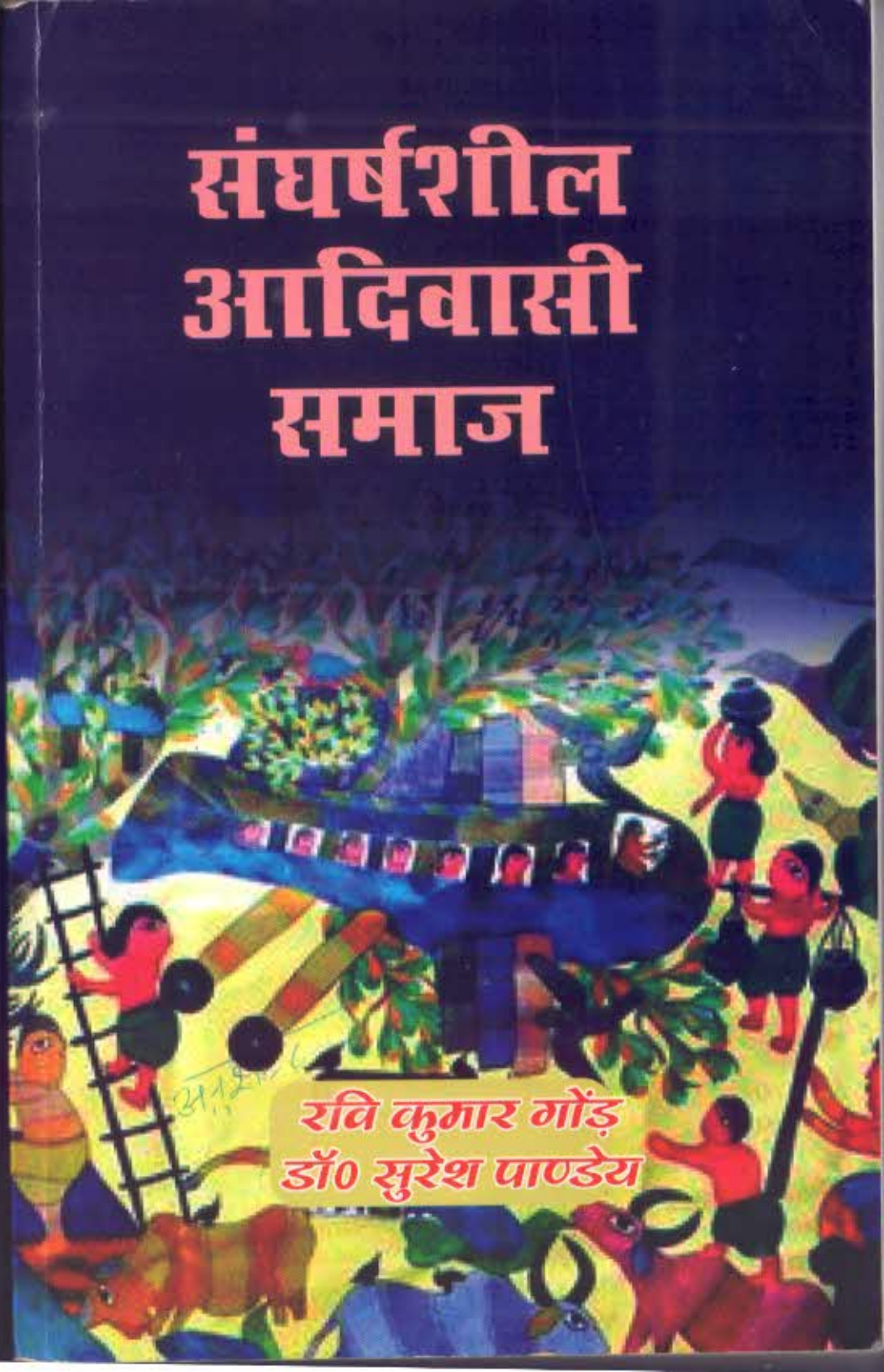

रवि कुमार गोंड़
डॉ0 सुरेश पाण्डेय

लेखकीय प्रति.
डॉ. अनुशब्द

...घर्षशील आदिवासी समाज

संपादक
रवि कुमार गोंड़
डॉ० सुरेश पाण्डेय

अनुशब्द

सन्मति पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

ISBN: 978-93-851933-5-4

© रवि कुमार गोंड़

प्रकाशक
सन्मति पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

मुख्य कार्यालय:
बी–347, संजय विहार,
मेरठ रोड, हापुड़–245101 (उ0प्र0)

प्रशासनिक कार्यालय:
एच–211, सेक्टर–63,
नोएडा (उ0प्र0)
Email: sanmati555@gmail.com
फोन: 0122–2303670,
मो. 8439645104, 09997184964

प्रथम संस्करण: 2016

मूल्य: 150/–

डिजाईन एण्ड टाईप सैटिंग:
RETROTECH

भारत में मुद्रित

31/2/16

भूमिका

आदिवासी समाज पर साहित्य चिंतन समय की आवश्यकता

आदिवासी विमर्श इक्कीसवी सदी के द्वितीय दशक के पूर्वार्द्ध के साहित्यिक चिंतन की सबसे महत्त्वपूर्ण परिघटना है। सदियों से समाज की मुख्य धारा से बहिष्कृत-तिरस्कृत यह समाज युगों से "यूज़ एण्ड थ्रो" का पात्र बनता रहा है और इतिहास की पाद टिप्पणियों में भुला दिए जाने योग्य स्थान पाकर संतुष्ट होता रहा है। जल, जंगल, जमीन, जानवर, जड़ी-बूटी पर निर्भर जुझारू जीवन शक्ति के ये जीवंत प्रतीक धीरे-धीरे जमींदारों की जबरन बेगार, जालिम साहूकारों के जुल्म-ज़्यादतियों के शिकार और जमाने एवं सरकार की उपेक्षा के शिकार होकर तथाकथित सांस्कृतिक पहचान के शोपीस बनकर रह गए हैं और जिनकी किस्मत इतनी अच्छी नहीं थी, वे ज़ोर-जुल्म झेलते हुए जीवन जीने को अभिशप्त हैं।

यह सच है कि दलित तबका शिक्षा, विकास तथा धनार्जन के मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा गया, किन्तु इसके विपरीत अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने के लिए आदिवासी ही सबसे पहले संगठित होकर उठ खड़े हुए थे। पहला विद्रोह सन् *1765* में खासी जनजाति ने, तत्पश्चात सन् *1817* ई. में खानदेश आन्दोलन और अंग्रेज़ों के विरुद्ध सबसे बड़ा विद्रोह तिलका मांझी ने सन् *1824* में उस समय किया था, जब उन्होंने अंग्रेज़ कमिश्नर क्लीवलैण्ड को तीर से मार गिराया था। सन् *1855* ई. में संथाल विद्रोह तथा सन् *1890* में बिरसा मुंडा का आन्दोलन अंग्रेज़ों के विरूद्ध आदिवासियों के संघर्ष की गौरव गाथाएं हैं, किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि इतिहाकार *1857* ई. को ही नवजागरण का प्रस्थान बिन्दु मानते हैं और आदिवासियों के सशस्त्र विद्रोह की उपेक्षा कर देते हैं। यह अत्यन्त क्षोभ की बात है कि जिन आदिवासियों ने भारतभूमि को अंग्रेज़ों के चंगुल से बचाने के लिए संघर्ष छेड़ा, उन्हीं दीन-हीन अबोध आदिवासियों को स्वाधीनता मिलने के बाद से ही विकास के नाम पर उनके जल, जंगल और जमीन से खदेड़ने का अभियान शुरू कर दिया गया। जिन जंगलों में आदिवासी पर्यावरण के साथ एकात्मता स्थापित करते हुए निवास किया करते थे, उन्हें विकास की आवश्यकता के नाम पर उजाड़ दिया गया और वहां पर बड़े-बड़े कल-कारखाने, खदान, बांध आदि बना दिए गए।

अंत में मैं भूमिका लेखन हेतु आलोचक-समीक्षक डॉ. पुनीत बिसारिया जी
कोटिशः आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय इस पुस्तक के
दिया। और साथ ही उन सभी लेखकों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन लो
ने इस पुस्तक में अपना कीमती आलेख हमें उपहार स्वरूप भेंट किया।

सधन्यवाद!

रवि कुमार गों
हिंदी विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय हि.प्र.
टेब- शाहपुर, छतरी
जि०- कांगड़ा (हि० प्र०)-176206
मो०- 09318133037

अनुक्रमणिका

उपेक्षित प्रश्नः जनजातीय भाषा सर्वेक्षण, संरक्षण	प्रो० हेमराज मीणा 'दिवाकर'
आदिवासी अस्मिताः संघर्ष एवं चुनौतियाँ	डॉ० मुकेश कुमार मिरोठा
नई सदी का हिंदी उपन्यास और आदिवासी विमर्श	प्रो० संजय नाईनवाड़
आदिवासी जीवन संघर्ष और समकालीन हिंदी उपन्यास	डॉ० शशिभूषण मिश्र
हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी आत्मबोध तथा संघर्ष चेतना	डॉ० सीता यादव
हिंदी उपन्यास में जनजातीय जीवन और संस्कृति	डॉ० पंकज साहा
हाशिये पर आदिवासी समाज और संस्कृति	प्रो. रणजीत कुमार सिन्हा
आदिवासी जीवन का चित्रण	डॉ० हाशमबेग मिर्जा
अरूणाचल की जनजातियाँ और बौद्ध संस्कृति	वीरेन्द्र परमार
'हो' जनजातिः अस्ति और अस्मिता	डॉ० अनुशब्द
आदिवासी भाषाओं का विकास और भविष्य	डॉ० दिग्विजय शर्मा
गालो जनभूमि और भाषा	डॉ० रमण शाण्डिल्य
संताल परगना कब स्वतंत्र होगा महाजनी गुलामी से?	जसिन्ता केरकेट्टा
त्रिपुरा की प्रमुख जनजातियाँः एक सांस्कृतिक परिचय	डॉ० जय कौशल
तेलंगाणा इतिहास और आदिवासीः स्वतंत्रता के लिए संघर्ष	डॉ० बोंद्यालु बानोतु
आदिवासी कविताः दर्द, हाशिया और सच	रवि कुमार गोंड़
संजीव के जंगल में आदिवासी जीवन-संघर्ष	रवि शंकर शुक्ल
पूर्वोत्तर के जनजातीय साहित्य में वैश्विक चेतना	श्रीमती मनोहर मयुम यमुना देवी
गुज्जर "शासक से यायावर"	सुरेश पाण्डेय
	रवि कुमार गोंड़

अनुक्रमणिका

१. डॉ. वीरेन्द्र परमार-अरुणाचल के आदिवासी और उनका लोकसाहित्य ;२००६- राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

२. डॉ. जे.एन. चौधरी-अरुणाचल पेनोरेमा

३. श्री निरंजन सरकार-बुद्धिज्म एमौंग द मोंपाज एंड शेरदुक्पेन्स ;१९९०

४. श्री टी.के.एम. बरुआ-द सिंहफोज एंड देयर रिलीजन ;१९७७

उपनिदेशक, कार्यान्वयन

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र

राजगढ़ रोड, बाई लेन नं.१, पो०-शिलपुखुरी,

गुवाहाटी-७८१००३

'हो' जनजाति: अस्ति और अस्मिता

डॉ० अनुशब्द

कार्ल मार्क्स ने कहा है कि "इतिहास विभिन्न पीढ़ियों के उत्तराधिकार के सिवा और कुछ नहीं है। इनमें से प्रत्येक पीढ़ी अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से प्राप्त भौतिक संपदा, पूँजी तथा उत्पादन शक्तियों का दोहन करती है। इस प्रकार एक ओर पूरी बदली परिस्थितियों में परम्परागत क्रियाशीलता जारी रहती है तो दूसरी ओर पूर्णतः परिवर्तित क्रियाशीलता पुरानी परिस्थितियों को संशोधित कर देती है।"१ इस परिप्रेक्ष्य में यदि हम देखें तो 'हो' जनजाति मुंडा जनजाति की ही एक शाखा है। इनके आदिम पूर्वज मुंडा ही थे जिनकी जीवन-यात्रा के प्रारम्भिक संकेत हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की घाटियों में मिलते हैं।

'इनसाइक्लोपिडिया मुंडारिका' में मुंडा की तीन शाखाओं की चर्चा है:

१. महली मुंडा जो तमाड़ क्षेत्र में बस गए हैं, जिन्हें तमाड़िया कहा जाता है।

२. कम्पाट मुंडा जिसे मुंडा नाम से अभिहित किया जाता है।

३. हो मुंडा जिन्हें 'हो' नाम से संबोधित किया जाता है।२

निवास-स्थान की भौगोलिक भिन्नता एवं देशीयता के दबाव के कारण इनकी बोलियों में अंतर विकसित हुआ। ध्यातव्य है कि 'मुंडा' भी अपने को 'होरको' ही कहते हैं। इसी तर्ज पर 'हो' भी अपने को 'होको' ही कहते हैं। 'होरको' या 'होको' शब्द की अर्थव्याप्ति का सूत्र इस जनजाति में प्रचलित 'मिथ' में मिलता है। इसके अनुसार 'हुर' (हंस) के अंडे से मनुष्य जाति का उद्भव हुआ है। इसीलिए 'होको' या 'होरको' संज्ञा आदमी को प्राप्त हुई।३ लोक कथा किसी जाति विशेष की आत्मकथा होती है। लोक-संस्कृति का प्रमाणिक दस्तावेज होती है। स्मरणीय है कि बोआज ने सिर्फ लोकहित के आधार पर सिमिशियन जाति की जीवन-पद्धति का पुनर्निर्माण किया था।४

आज की तारीख में झारखंड प्रदेश के पूर्वी एवं पश्चिमी सिंहभूम जिले का सम्पूर्ण क्षेत्र हो जनजाति का आवास-क्षेत्र है। इसकी सर्वाधिक आबादी सदर अनुमंडल, चक्रधरपुर अनुमंडल, सराकेला अनुमंडल के उत्तरी-पश्चिमी भाग एवं घाटशिला अनुमंडल के उत्तरी-पूर्वी भू-भाग में पायी जाती है। २००१ की जनगणना के अनुसार पश्चिमी सिंहभूम में 'हो' जनजाति की कुल आबादी १०,१०००० है।

आज भी सिंहभूम के दोनों जिले वनों एवं सुरम्य घाटियों के आकर्षक क्षेत्र हैं। १४वीं-१२वीं शती की बात तो अनुमान्य ही है। 'हो' समुदाय की सभ्यता एवं संस्कृति का पल्लवन इन दुर्गम घाटियों

अनुशब्द